

Home / अन्य / "मानवता ने विज्ञान और आर्थिक विकास...

"मानवता ने विज्ञान और आर्थिक विकास तो अपनाया, पर आंतरिक शिक्षा नहीं" आचार्य प्रशांत का कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में संवाद



31 May 2026 10:53 AM



दार्शनिक और लेखक आचार्य प्रशांत ने शुक्रवार को यूके के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में खचाखच भरे सभागार को संबोधित किया। ऐतिहासिक कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में आयोजित इस फायर-साइड चैट में उन्होंने यह कहा कि मानवता के सबसे गहरे संकट, जिनमें जलवायु परिवर्तन सबसे आगे है, केवल तकनीक या नीतियों से नहीं सुलझाए जा सकते, क्योंकि उनकी जड़ें बाहरी दुनिया में नहीं, बल्कि मनुष्य के उस आंतरिक जीवन में हैं जिसे कभी गंभीरता से परखा ही नहीं गया। श्रोताओं की प्रतिक्रिया असाधारण थी; सारी सीटें एक दिन पहले ही बुक हो चुकी थीं।

नई दिल्ली, 31 मई (आईएनएस)। दार्शनिक और लेखक आचार्य प्रशांत ने शुक्रवार को यूके के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में खचाखच भरे सभागार को संबोधित किया। ऐतिहासिक कैम्ब्रिज यूनियन में आयोजित इस फायर-साइड चैट में उन्होंने यह कहा कि मानवता के सबसे गहरे संकट, जिनमें जलवायु परिवर्तन सबसे आगे है, केवल तकनीक या नीतियों से नहीं सुलझाए जा सकते, क्योंकि उनकी जड़ें बाहरी दुनिया में नहीं, बल्कि मनुष्य के उस आंतरिक जीवन में हैं जिसे कभी गंभीरता से परखा ही नहीं गया। श्रोताओं की प्रतिक्रिया असाधारण थी; सारी सीटें एक दिन पहले ही बुक हो चुकी थीं।

कैम्ब्रिज यूनियन वह ऐतिहासिक मंच है जहाँ विंस्टन चर्चिल, फ्रैंकलिन डी. रूज़वेल्ट और स्टीफन हॉकिंग जैसी विभूतियाँ अपने विचार रख चुकी हैं। आयोजकों के अनुसार यह इस शिखर सम्मेलन का सबसे प्रमुख सत्र था। राजनीति, कूटनीति और उद्योग जगत के तमाम प्रतिष्ठित वक्ताओं के बीच आचार्य प्रशांत इस कार्यक्रम में एकमात्र दार्शनिक थे और उन्हें दिन का सबसे लंबा स्पीकर-स्लॉट दिया गया। यह इस बात का संकेत था कि आयोजक इस सभा के केंद्र में, जहाँ बाहरी सत्ता और शक्ति के प्रतिनिधि एकत्र थे, आंतरिक जीवन के प्रश्नों को भी स्थान देना चाहते थे।

यह कार्यक्रम कैम्ब्रिज इंडिया बिज़नेस डायलॉग द्वारा आयोजित था और इसका संचालन कैम्ब्रिज जज बिज़नेस स्कूल में सेंटर फॉर इंडिया एंड ग्लोबल बिज़नेस के निदेशक प्रोफेसर जयदीप प्रभु ने किया, जो विश्व के अग्रणी व्यापार एवं वैश्विक शोध संस्थानों में से एक है। इस वार्तालाप का विषय था: "जलवायु परिवर्तन, असमानता और वैश्विक उत्तरदायित्व के संदर्भ में भारतीय चिंतन परंपराएँ।" प्रोफेसर प्रभु ने ही पूरी फायर-साइड चैट का नेतृत्व किया और आचार्य प्रशांत से प्रश्न पूछे। इस सभा में कनिष्क नारायण (एआई और ऑनलाइन सेफ्टी मंत्री तथा वेल ऑफ ग्लैमॉर्गन से सांसद), लॉर्ड करण बिलिमोरिया, यूनाइटेड किंगडम में भारत के उच्चायुक्त महामहिम पेरियासामी कुमारन और गोदरेज एंटरप्राइजेज़ ग्रुप की न्यरिका होल्कर भी उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि इस शिखर सम्मेलन में आचार्य प्रशांत एकमात्र ऐसे वक्ता थे जिनके सत्र का संचालन कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर ने किया।

आईआईटी दिल्ली और आईआईएम अहमदाबाद के पूर्व छात्र और प्रशांत अद्वैत फाउंडेशन के संस्थापक आचार्य प्रशांत ने सभा से कहा कि मानवता इतिहास में कभी इतनी समृद्ध और

उनका तर्क एकदम सटीक था। मनुष्य की कामना, उन्होंने कहा, कोई तकनीकी समस्या नहीं है और इसे तकनीकी उपायों से नहीं सुलझाया जा सकता। स्कूल, विश्वविद्यालय और संस्थान लोगों को कौशल और बाहरी ज्ञान तो देती हैं, लेकिन आंतरिक शिक्षा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। वे प्रश्न जो यह तय करते हैं कि ज्ञान का उपयोग कैसे होगा, लगभग कभी नहीं पूछे जाते: कामना क्या है, हमारी इच्छाएं कहाँ से आती हैं, हम जो चाहते हैं वह क्यों चाहते हैं, और क्या जिस स्वयं की हम कल्पना करते हैं वह वाकई वैसा है? उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि वे विज्ञान का गहरा सम्मान करते हैं और तकनीक आवश्यक तथा मूल्यवान है। समस्या विज्ञान में नहीं, बल्कि उस अपरिचित अहम में है जो विज्ञान को दिशा देता है। मनुष्य ने जो भी उपकरण बनाए हैं, वे सब एक ऐसी मनोवैज्ञानिक रिक्तता को भरने में लगे हैं जो कभी परखी नहीं गई और इसीलिए कभी तृप्त भी नहीं हो सकती। यदि इस प्रयास में पूरी पृथ्वी को भी निचोड़ लिया जाए, तो भी आंतरिक भूख बनी रहेगी।

जलवायु संकट पर उन्होंने कहा कि इस समस्या को बार-बार गलत ढंग से पढ़ा जा रहा है। दक्षता ने कभी ऐतिहासिक रूप से उपभोग को कम नहीं किया। भाप के इंजन बेहतर हुए; बिजली की खपत कई गुना बढ़ गई। इलेक्ट्रिक वाहनों को अब समाधान बताया जा रहा है, फिर भी उनके लिए कोबाल्ट और लिथियम का खनन करना पड़ता है, जंगल काटने पड़ते हैं और पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुंचाना पड़ता है। नेता केवल मतदाताओं से नहीं, उपभोक्ताओं से भी गढ़े जाते हैं, और उपभोक्ता वही अहम है जिसे अब तक किसी नीति ने नहीं बदला। जब तक वह अहम नहीं बदलता, हर उस उपाय का तोड़ निकाल लिया जाएगा जो उपभोग की आदत को असुविधाजनक बनाए।

जब प्रोफेसर प्रभु ने पूछा कि क्या इस तरह के आंतरिक परिवर्तन के लिए अब समय बचा है, तो आचार्य प्रशांत का उत्तर सीधा था। समय, उन्होंने कहा, तब लगता है जब कोई दूरी तय करनी हो या कोई अतिरिक्त काम करना हो। जलवायु संकट के लिए मानवता को कुछ अतिरिक्त नहीं करना है। उसे वह करना बंद करना है जो वह पहले से कर रही है। उन्होंने कहा, "गति बढ़ाने में समय लगता है। जहाँ हो, वहीं रुकने में कितना समय लगता है?" वैश्विक जलवायु सम्मेलन एक साझा कारण से विफल होते रहे हैं: हर बार यह मान लिया गया कि समाधान के लिए और अधिक करना होगा, जबकि संकट ही बहुत अधिक करने का परिणाम है।

पूर्व और पश्चिम, स्त्री और पुरुष, तथा आर्थिक दृष्टिकोण के बीच सेतु बनाने के प्रश्न पर आचार्य

आंतरिक ईमानदारी। उन्होंने 'विद्या' और 'अविद्या' के उपनिषदिक भेद, यानी बाहरी ज्ञान और आंतरिक बोध, को आधुनिक सभ्यता के असंतुलन की सबसे पुरानी और अब भी सबसे सटीक पहचान बताया। मानवता ने बाहरी ज्ञान में अपार प्रगति की है, लेकिन आंतरिक समझ लगभग अनुपस्थित ही रही है।

जब प्रोफेसर प्रभु ने पूछा कि आईआईटी दिल्ली और आईआईएम अहमदाबाद से पढ़ने के बाद उन्होंने कॉर्पोरेट राह क्यों छोड़ी, तो उन्होंने इसे एक क्रमिक पहचान बताया, कोई अचानक लिया गया निर्णय नहीं। तकनीक और प्रबंधन में जिन समस्याओं को वे सुलझाने की स्थिति में थे, वे किसी कहीं अधिक मूलभूत चीज़ के नीचे की धारा थीं जिसे समाज मुश्किल से ही दर्ज कर रहा था। उन्होंने देखा कि जो लोग उनके साथ प्रवेश परीक्षाओं में थे, असाधारण प्रतिभा के धनी लोग, वे अपनी उसी प्रतिभा को उन संकटों को गहरा करने में लगा रहे हैं जो आज समाधान मांग रहे हैं। मूल समस्या, उन्होंने कहा, मानवीय आंतरिकता की है।

इसी पहचान ने एक संस्थागत रूप लिया। प्रशांत अद्वैत फाउंडेशन के माध्यम से आचार्य प्रशांत महीने के हर दिन एक ऑनलाइन नाइट स्कूल का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसमें छात्र उपनिषदों, भगवद् गीता, बौद्ध शिक्षाओं, लाओ त्जु के लेखन और अस्तित्ववादी साहित्य व नाटकों के माध्यम से अपने जीवन को परखते हैं। छात्र परीक्षाएँ देते हैं और यह कार्यक्रम 100 से अधिक देशों तक पहुँचता है। इसका उद्देश्य, उन्होंने कहा, विद्वता नहीं है। उन्होंने सभा से कहा, "हम अहम के विद्यार्थी हैं। ये ग्रंथ मंज़िल नहीं हैं। ये हमें वापस अपने पास लाते हैं।"

सत्र के बाद मीडिया से बात करते हुए आचार्य प्रशांत ने अपनी बात को और पैना किया। पिछले दो सौ वर्षों में, उन्होंने कहा, मानवता ने विज्ञान, तकनीक, आर्थिक विकास और वैश्विक अन्वेषण सभी को आज़माया है और इन सभी में अभूतपूर्व प्रगति की है। फिर भी वह युद्ध, पारिस्थितिक विनाश और गहरी आंतरिक असंतुष्टि की ओर बढ़ती जा रही है। एकमात्र गंभीर चूक 'सामूहिक आंतरिक शिक्षा' का अभाव है। वे प्रश्न जो सब कुछ बदल सकते थे: मैं कौन हूँ, मैं वास्तव में क्या चाहता हूँ, क्या संग्रह कभी तृप्त कर सकता है, ठीक ये ही प्रश्न हैं जो किसी भी स्कूल, विश्वविद्यालय या संस्था ने अपने केंद्र में नहीं रखे। समाधान, उन्होंने कहा, आंतरिक ईमानदारी, प्रेम और सही नीयत में है। बाहरी प्रगति बिना आंतरिक समझ के प्रगति नहीं है, यह गलत दिशा में त्वरण है।

भारतीय चिंतन परंपरा अर्थशास्त्र और व्यापार को क्या दे सकती है, इस पर उन्होंने कहा कि समस्या कभी व्यवस्था में नहीं होती। विज्ञान, अर्थशास्त्र, व्यापार और चिकित्सा, सभी अंततः

यदि आविष्कारक में विवेक नहीं है, तो आविष्कार हानिकारक बन जाता है। वैश्विक समस्याओं की जड़ आंतरिक है, उन्होंने कहा। बेहतर व्यवस्थाएं केवल अधिक विवेकशील मनुष्यों से ही निकलेंगी।

जलवायु परिवर्तन और बढ़ती गर्मी के संकट को तकनीक सुलझा सकती है या नहीं, इस पर उनका उत्तर स्पष्ट था। जलवायु परिवर्तन केवल कार्बन की समस्या नहीं है, यह मानवीय मनोविज्ञान की समस्या है। उत्सर्जन पैदा करने वाली आग मनुष्य का अहंकार, लालच और अपरिचित इच्छाएं हैं। आंतरिक बदलाव के बिना तकनीक इस संकट को नहीं सुलझाएगी। वह उसे और तेज कर देगी।

आचार्य प्रशांत एक दार्शनिक और बेस्टसेलिंग लेखक हैं जो इस समय यूके दौरे पर हैं। कैम्ब्रिज के बाद वे ऑक्सफोर्ड, लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, किंग्स कॉलेज लंदन और अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों को संबोधित करेंगे। उपनिषदों, भगवद् गीता, माध्यमिक बौद्ध दर्शन और वैश्विक ज्ञान परंपराओं पर आधारित उनके कार्य की पहुँच 100 से अधिक देशों में 10 करोड़ से अधिक ऑनलाइन फॉलोवर्स तक है।

अस्वीकरण: यह न्यूज़ ऑटो फ़ीड्स द्वारा स्वतः प्रकाशित हुई खबर है। इस न्यूज़ में BhaskarHindi.com टीम के द्वारा किसी भी तरह का कोई बदलाव या परिवर्तन (एडिटिंग) नहीं किया गया है। इस न्यूज़ की एवं न्यूज़ में उपयोग में ली गई सामग्रियों की सम्पूर्ण जवाबदारी केवल और केवल न्यूज़ एजेंसी की है एवं इस न्यूज़ में दी गई जानकारी का उपयोग करने से पहले संबंधित क्षेत्र के विशेषज्ञों (वकील / इंजीनियर / ज्योतिष / वास्तुशास्त्री / डॉक्टर / न्यूज़ एजेंसी / अन्य विषय एक्सपर्ट) की सलाह जरूर लें। अतः संबंधित खबर एवं उपयोग में लिए गए टेक्स्ट मैटर, फोटो, विडियो एवं ऑडियो को लेकर [BhaskarHindi.com](https://www.bhaskarhindi.com) न्यूज़ पोर्टल की कोई भी जिम्मेदारी नहीं है।

Tags

राष्ट्रीय

